हरिशंकर आदेश रचित सप्तशतियों में चित्रित प्रकृति सौन्दर्यः एक अध्ययन

सोमवीर

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय,

अटेली, हरियाणा।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 9, Issue 5, (September-October 2021)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

प्रो. हरिशंकर आदेश के काव्य में भारतीय प्रकृति का ही नहीं, कनाडा, अमेरिका एवं ट्रिनीडाड आदि देशों की प्रकृति के सौन्दर्य का विविध चित्र उकेरा गया है । प्रकृति के अनन्य उपासक प्रो. आदेश को प्रकृति के आंगन में अनुपम शांति मिलती है । यह शांति उन्हें सौन्दर्य सृष्टि प्रदान करती है और यह सौन्दर्य उनके काव्य में जीवत रूप में उतारता रहा है । प्रकृति का विविध रूप कवि के भाव विविधता के आधार स्वरूप दृष्टिगोचर होता है । प्रो. आदेश के काव्य में चित्रित प्रकृति सौन्दर्य मुख्य रूप से भारतीय-विदेशी एवं जड़-चेतना दो आयामों में विभक्त किया जा सकता है ।

भारतीय प्रकृति

राष्ट्रीयता की नवधार-गतिशीलता के परिणाम स्वरूप इनके काव्य में भारतीय प्रकृति सौन्दर्य का विस्तृत चित्रण किया गया है ।

> “कंठ सुशोभित यमुना-गंगा,
> सजा शीश पर केतु तिरंगा ।
> गाती हे यश गाया तेरी,
> हिम की चोटी किंचिन चिंगा ।”

वन प्रांत में विभिन्न वन्य प्राणियों, लता गुल्मों और पेड़-पौधो के सौन्दर्य में शकुंतरता सदा हसती-मुस्कराती हुई जीवन को गतिशील बनाए है । कोयल के साथ गीत गाकर संपूर्ण विपिन जाग्रित कर देती है । प्रकृति के सौन्दर्य को यह प्रक्रिया अत्यधिक जीवंतरा प्रदान करती है :

> “पशु-पक्षी सौन्दर्य नृत्य मयूरों के संग करती,
> कोकिल के संग गाती ।
> मृग छौनों को सदा स्नेह से,
> हंस-हंस हृदय लगाती है ।”

अध्यात्म सौन्दर्य उभारकर आदेश ने प्रकृति सौन्दर्य को अलौकिक रूप प्रदान करते हैं । पत्र-विहिन वृक्षों के सौन्दर्य में समाधिस्थ स्वरूप उकेर कर मन को स्वभाविक रूप से आकर्षित कर लेते हैं :

"पेड़-पौधो का सौन्दर्य हैं खड़े खल्वाट पादप,
कर रहे मानो कठिन तप ।
हिम-समाधि समान आंगन,
झेल असह्य भार स्मृति का ।"

प्रवासी महाकवि भारत की प्रकृति के सौन्दर्य काबहुविध चित्रण सप्तशतियों में करते हुए अपने काव्य को अतीव सजीवता प्रदान की है।

विदेशी प्रकृति

प्रवासी महाकवि हरिशंकर आदेश भारतीय संस्कृति, हिन्दी भाषा एवं भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसारार्थ विदेशी भ्रमण करते रहे । उनका मन जहां रमा वहां हंसे, कुछ पल रूके एवं सिनसिनाटी का सौन्दर्य देखिए :

"नगर सिनसिनाती दिखे, सुंदर और विशाल ।
बहती है सुंदर नदी, ले मदमाती चाल ।
ये पर्वत, ये घाटियां, खडे विटप चहुं ओर ।
सुखमय है वातावरण बैठा ढिंग चितचोर ।"

डॉ. नरेश मिश्र ने प्रो. हरिशंकर आदेश के प्रकृति चित्रण की श्रेष्ठता एवं उनके माध्यम से दिव्य सौन्दर्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है :

"आस्था और विश्वास के अनुरूप धरातल पर संस्कारों के पूत मन से स्वयं आगे बढ़ते हुए, औरों को सतत आगे बढते रहने की प्रेरणा देने वाले प्रो. आदेश ने प्रकृति में बार-बार अनेक बार देव-दर्शन लिया है ।"

जड़ाधारित

सहृदय कवि सृष्टि के किसी भी अंग को जड़ नहीं मानता है, वह उसके स्वरूप के प्रभाव के आधार पर उसे गतिशील प्रभावी या जड़वत मानता है । सृष्टि के कुछ भाग जो स्थिरता का बोध कराते हैं उन्हें जड़ वर्ग में रख सकते हैं । साहित्यिक रूप में जड़ शब्द स्वयं में भी जड़ नहीं है । पेड़ पौधों की गतिशीलता सर्वविदित है । उसकी वृद्धि पर ही पेड़-पौधो का अस्तित्व और उनकी जीवन्तता आधारित रहती है । सामान्य रूप से प्रकृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग पर्वत को जड़ वर्ग में रखा जा सकता है।

प्रो. आदेश के काव्य में पर्वत श्रृंखलाओं का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किया गया है । विन्ध्य पर्वत भारत देश के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थल है । इसके प्राकृतिक सौन्दर्य के सम्मुख पहुंचकर सबका मन नतमस्तक हो जाता है । इस श्रृंखला का मनोहारी चित्र उपस्थित करते हुए महाकवि ने लिखा है :

"गंगा ओ गोदावरी
रहे सदा सुधा भरी ।
विंध्य-हिमाचल-सतपुड़ा
अमृत लुटाए विभावरी ।"

कवि ने पर्वत और वहां की घाटियों में व्याप्त स्वर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन किया है । पर्वत शिखर से कल-कल ध्वनि उत्पन्न करती हुई नदियों में अपूर्व भाव तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति कवि ने की है । 'जय जय जननी भारती' कविता में सहृदय कवि ने गंगा-यमुना की धारा में अनुपम सौन्दर्य और प्रेरक भावानुभव किया है :

"कण्ठ सुशोभित यमुना गंगा
सजा शीश पर केतु तिरंगा
गाती है यश-गाथा तेरी
हिम की चोटी किंचिन चिंगा ।"

पर्वत की चोटी भारतवर्ष के आंगन की हो अथवा विदेश की उसका सौन्दर्य कवि मन को अपनी ओर आकर्षित कर ही लेता है। ट्रिनीडाड सागर की लहरों से पूत होता, पहाड़ियों पर वनस्थलियों में मुस्कराता देश है। सहृदय कवि ऐसे परिवेश के प्राकृतिक सौन्दर्य में बैठकर सुखद और प्रेरक क्षणों का आनंदानुभव लेता हुआ कहता है :

"ज्योति की फुलवारियां
मुस्करा रही है सामने
मैं चांसलर हिल के शिखर पर
हूं, अवस्थित ।"

महाकवि की लेखनी से सघन वन, रेगिस्तान से लेकर उच्च शिखर बर्फ से ढकी चोटियों वाले हिमालय के प्राकृतिक स्वरूप का मनमोहक चित्रण किया गया है । हिमालय पर्वत के कर्म सौन्दर्य पर सहृदय मंत्रमुग्ध हो कह उठता है :

"सारे जग का पथ-प्रदर्शक
हिमगिरी-सा शाश्वत संरक्षक
आदि काल से खड़ा हुआ है
बनकर-भारत मां का रक्षक ।"

निष्कर्षतकहा जा सकता है कि प्रो. हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में प्रकृति के जड़ संदर्भों का प्रभावशाली और मनमोहक चित्रण किया गया है । इनके काव्य में पर्वत, गहन-वन के बहुल चित्रों के साथ जनरहित रेगिस्तान के सौन्दर्य का यथा स्थान चित्रण प्राप्त होता है।

चेतना धारित

चेतनता मानव की ही नहीं प्रकृति की पहचान है । जड़ प्रकृति भी ऐसे संदर्भो के सान्निध्य या स्पर्श से प्रभावी चेतना में सामने आती है और उसमें आकर्षक सौन्दर्य उभर आता है । चेतन प्रकृति में चंद्रमा और तारे गण, सर-सरिता, वन-उपवन, पशु, पक्षी और खेत खलिहान आदि दृश्य उपस्थित होते हैं । कवि का मन ऐसे प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्रांकर के लिए तत्पर रहता है ।

प्रवासी महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश के काव्य में चेतन प्रकृति की अनुपम छटा शुरू से लेकर अंत तक मिलती है । ऐसी प्रकृति के विविध आधार इनके काव्य को आलौकिक स्वरूप प्रदान कर रहे हैं । ऐसे चित्रण में कवि के भावों का उत्कर्ष प्रभावी रूप से सामने उपस्थित होता है जिसमें राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान, आत्मविश्वास और मनः शांति का सुंदर भाव समन्वित रूप से दृष्टिगोचर होता है:

"पहले पहल जिस रवि ने संवारा ।
ऊषा की निर्मल छवि ने संवारा ।
निकली जहां से शुभ ज्ञान-गंगा,
कहता जगत जिसको मुक्ति धाम ।"

कवि की मान्यता है कि भारत के सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में उदभूत दिव्य और आकर्षक भावों के आधार पर भारतवर्ष को मुक्ति धाम की संज्ञा मिली हैं ।

सहृदय कवि प्रकृति का उपासक है । वह ऐसे ही परिवेश में मानसिक विचरण करते हुए अनुपम संतोष का अनुभव करता है । उसे भारतीय प्रकृति के चैतन्यशील प्रेरक सौन्दर्य पर गर्व महसूस होता है । 'भारत' कविता में कवि ने मुक्त कंठ से ऐसे प्रकृति सौन्दर्य का गुणगान किया है :

"सिधु शीश नत है चरणों पर गंगा जीवन करती ।
कश्मीर की स्वर्गिक सुषमा, मुख पर सदा विराजती ।
जिसका मस्तक चमक रहा है युग-युग के आकाश में
बसा हुआ वह भारत, मेरी हर धड़कन हर श्वास में ।

कवि के मन में चेतना प्रकृति का प्रभावी सौन्दर्य विद्यमान रहता है । सौन्दर्य पारखी कवि पौधे और वृक्ष की जीवन्तता और उसकी गतिमयता में सौन्दर्य सिक्त होते हुए लिखता है :

"नया नया स ही लगे, हर शिशु को हर बार ।
वह पादप सा प्रौढ़ है, किंतु सकल संसार ।"

कवि प्रकृति और मानव सौन्दर्य को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत कर उसे अधिक आकर्षक स्वरूप प्रदान करता है । कवि ने शकुंतला में नायिका की आंखों के अनुभव भाव को झरने तथा आनन के सौन्दर्य में समुद्र के भाव का चित्रण प्रस्तुत किया है :

"नयनों में लज्ज निर्झरणी
का सौ-सौ बल खाना ।
आनन पर लावण्य-सिंधु
कर रह-रहकर लहराना ।"

सरिता सतत आगे की ओर बढ़ती हुई मानव को प्रेरणा देती है कि उसे गतिशील बने रहकर विश्वकल्याण करे । सरिता की संगीतात्मकता जीवन में संगीतात्मकता का भाव प्रदर्शित करती है । भारत में अनगिनत नदियां अपनी लहरों से जहां अपने कूल को सींचती हुई आगे बढ़ती है, वहीं वातावरण को आकर्ष स्वरूप प्रदान करती हे । नदियों के सौन्दर्य से प्रकृति का मनमोहक रूप और अधिक प्रभावोत्पादक हो जाता हे । महाकवि ने गंगा कविता में ऐसे ही प्राकृति सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की है :

"तू है सब नदियों की रानी
अमृत है मां तेरा पानी
तेरे आंचल में बसते हैं,
काशी और हरिद्वार ।
रोगों से है मुक्ति दिलाती,
भागों से आसक्ति मिटाती,
हर लेती हर दोष दयाकर,
तू करुणा अवतार ।"

आकाश में सूर्य के आगमन से दिन के समस्त कार्य आरंभ हो जाते हैं । चंद्रमा-तारेगणों के आगमन से विश्रामदायनी रात का सुख सौन्दर्य चतुर्दिक शीतलता के लिए जगत प्रसिद्ध है । कवि ने अपनी अनेक कृतियों में चांद तारों के प्राकृतिक सौन्दर्य को चित्रित किया है । प्रवासी की पातीः भारत माता के नाम में कवि ने संसार को जो शीतलता चंन्द्रमा द्वारा प्रदान करवाई है वह और कोई नहीं कर सकता । इसका चित्र उपस्थित है :

"पड़े चंद्रमा पर है चरण अब मनुज के,
पड़े पांव मंगल पे संभव है उसके ।
मगर चन्द्र से मेरा परिचय सदा से
मैं कवि हूं मुझे प्यार शशि की अदा से ।"

प्रकृति के सौन्दर्य का स्वरूप सबको सदा मंगलकारी हो आवश्यक नहीं । विषम परिस्थितियों में यह विकसित होता सौन्दर्य या तो अप्रभावी होता है या फिर कष्टकर होता है । 'देवालय' कृति की रात बीती कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य कुछ ऐसा ही प्रभाव उपस्थित करता है :

"लाल प्राची के नगर का
खुल गया फिर सूर्य मंदिर,

आरती करती उषा निज
नयनों में भर ज्योति अस्थिर ।
मधु-कलश छलके चतुर्दिक,
किंतु मैंने पीर पाई ।"

जीवन के आरोह-अवरोह में प्राकृतिक भाव-सौन्दर्य की विशेष भूमिका होती है । प्रातः और सांध्यबेला का सौन्दर्य किस व्यकित को प्रभावित नहीं करता है । कवि प्राकृतिक सौन्दर्य के विकास में आंदोलित होकर लिखने के लिए तत्पर हो जाता है :

"रजत लुटाया करता अंबर, संध्या स्वर्णदान देती है,
आलिंगन में भर-भर यामा, पुलकित अतुल मान देती है,
ज्योतित होगा शशि पूनम संग, जो कि अमा में मुरझा जाता ।
जीवन के इस वक्र राग में, हर अवरोह रंग लाता है ।
यदि साहस और धैर्य साथ दे, हर दुख ही सुख बन जाता है।
हर अवसान पाठ देता है नव, हर आरोह दिशा दिखलाता ।"

पवन की दिशा और गति से प्राकृतिक सौन्दर्य प्रभावित होता है । अनुकूल गति और शीतल हवा से सारा पर्यावरण आनंदित हो उठता है । महाकवि ऐसे पर्यावरण में प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा देखकर मंत्रमुग्ध हो कह उठता है :

"पहन रही हर कली आज,
नीली-पीली सी साड़ी ।
हरियाली ही बिछी मही पर
चमक रही हर झाड़ी ।
दिशा-दिशा ही महक रही,
उपवन की छटा निराली ।"

प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक प्रों हरिशंकर आदेश के काव्य में प्रकृति विविध रूपों में परिलक्षित है । सूक्ष्म भावों को प्रकट करने के लिए प्राकृतिक सौन्दर्य को महत्वपूर्ण आधार बनाया गया है । उनका समग्र काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य की अभिव्यकित के कारण मनभावन बन गया है ।

मानवीय

प्राकृतिक सौन्दर्य की चैतन्यता परखने का सूक्ष्म कार्य मानव द्वारा ही संभव है । सौन्दर्य प्रेमी मानव सृष्टि के अनुपम सौन्दर्य का विधान भी कर सकता है । मनुष्य के द्वारा ही सृष्टि अत्यंत सुंदर लगती है । यह भी कहा जा सकता है कि मानव और सौन्दर्य एक दूसरे के पर्याय है । जो मनुष्य दर्शन का ज्ञाता होगा वही सौन्दर्य की परख कर पाता है । मनुष्य के बाह्य चक्षु और अन्तः चक्षु

सौंदर्य के माध्यम से ही सर्वांग सृष्टि के सौन्दर्य-दर्शन की सार्थकता सिद्ध होगी । कोमलकांत पदावती में मनोरथ चित्रांकन करने वाले, प्रकृति के उपासक सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने मानव सौन्दर्य को सृष्टि की अनुपम धरोहर रूप में स्वीकार किया है :

"हार गई तुम प्रकृति ।
रच निरुपम
मानव कृति !
निखिल रूप रेखा, स्वर
हुए निछावर
मानव के तन, मन पर ।"

उपर्युक्त दृश्य से यह स्पष्ट होता है कि मानव के परम सौन्दर्य से सृष्टि के सौन्दर्य को अनूठापन और पूर्णतया प्राप्त होती है । आदिकाल से ही साहित्यकारों ने मानव-सौन्दर्य को विविध रूपों में चित्रित किया है ।

प्रवासी महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश के काव्य में नर-नारी, बालक-वृद्ध, गृहस्थ-संन्यासी आदि सभी के बाह्य एवं आतंरिक सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया गया है । जिस प्रकार समाज में मानव की विभिन्न स्थितियों का विशेष स्थान होता है ठीक उसी प्रकार उसके गान और भाव-सौन्दर्य का विशेष महत्व होता है । मानवीय गतिविधियों के माध्यम से सौन्दर्य को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। सौन्दर्य मनुष्य की पहचान है और सौन्दर्य पूरे परिवेश और परिवेश के प्रत्येक अंग को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता है । महाकवि के काव्य में मानवीय सौन्दर्य के विविध पक्ष चित्रित है ।

बाल

बाल सौन्दर्य के अंतर्गत शिशु और बालक के अंग-प्रत्यंग के आकर्षण और उनकी विविध गतिविधियों का चित्रांकन आता है । ऐसा माना जाता है कि शिशु परमात्मा का स्वरूप होता है । इस प्रकार उसके सौन्दर्य में दिव्य होना स्वाभाविक है । प्रो. हरिशंकर आदेश के महाकाव्य शकुंतला में बाल-क्रिड़ा के समय का सौन्दर्य अवलोकनीय है । सहज प्रकृति भोला रूप और मनोहरी गतिविधियां मन को बांध लेती है । दृष्टव्य है :

"मोटे मोटे गोल-कपोल अधर अरुणिम थे,
दीर्घ दिव्य आकर्षक नयन निश्चय निरुपम थे ।
अति चित्ताकर्षक गुडिया सी प्राण मूर्ति थी ।
शकुंतला शुचि की साकार मूर्ति थी ।"

बाल-क्रीडाओं का अनुपम सौन्दर्य मनमोहने वाला होता है । कव्य ऋषि की कुटि में शकुंतला की गतिविधियां वहां के सभी मनुष्यों को मोहित किए हुए थीं । चलने के प्रयत्न में गिर-गिर पड़ना और फिर उंगली का सहारा लेने और बालों का खींचने का भाव सौन्दर्य व्यक्त करते हुए महाकवि लिखता है :

"कभी खींचली पूंछ कभी थी श्मश्रु खींचती
ऋषि मन को ममता के जल से सदा सींचती ।
उंगली पकड़ पिता की ठुमक-ठुमक चलती थी,
स्वतः यत्न कर पुनः पुनः गिरती उठती थी ।"

महाकवि प्रो. आदेश की लेखनी से अनेक बाल सौन्दर्य से संदर्भित गीत प्रकाश में आए हैं । इन कृतियों में बाल-मन को हंसा-हंसा कर जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा प्रदान की गई है ।

कवि बचपन के सुंदर दिवसों की कल्पना में खोकर अपूर्व आनंदानुभूति प्राप्त करता है। वास्तव में यह अनुभूति शैशवावस्था की ही देन है । यह सौन्दर्य के कारण ही संभव हो सका । भारतीय परिवेश में बीते बचपन के सौन्दर्य को याद कर कवि भावों को अभिव्यक्ति देने के लिए तत्पर हो उठता है :

"वो माता की ममता, पिता की सरलता ।
वो नानी की वाणी, वो मामा की क्षमता ।।
वो पादप, वे कलियां, वो भारत की गलियां ।
वो कागज की नावें, वो सर की मछलियां ।।
वो शैशव की सुधियां, नगर गांव गलियां ।
नहीं भूल पाता हूं, भारत की स्मृतियां ।।
मंदिर होता बचपन, मधुर होता बचपन ।
भला कितना होता जो, चिर होता बचपन ।।

बचपन के अनुपम सौन्दर्य का पारखी कवि बाल गीतों के माध्यम से शारीरिक और मानसिक सौन्दर्य के विकास की प्रबल इच्छा में विचरण करता रहता है । कवि का मन चाहता है हर बच्चा शरीर से स्वस्थ और मानसिक रूप से गुणवान और विनम्र बने । इन्हीं भावों से आंदोलित होकर कवि बाल कविता में चिंतन करते हुए अपने भावों को अभिव्यक्त करता है :

"थोड़ी कसरत करो लगा मन,
बली बनाओ तुम अपना तन,
बड़े बनो, अब आलस छोड़ो
सबका आदर करना सीखो,
सद्गुण को अपनाना सीखो,
कभी किसी का मन मत तोडो ।"

सहृदय कवि ने बाल जीवन के सौन्दर्य का आकर्षक चित्रांकन किया है। जब वयः संधि का आगमन होता है तो शारीरिक विकास के साथ भावों का हृदयस्पर्शी रूप सामने आता है, महाकवि प्रो. आदेश ने शकुंतला में नायिका के वयः संधि के भाव सौन्दर्य की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार की है :

"लगे घुटने गुड्डे गुड़िया,
गुडिया-सी संकुचाती ।
बचपन को यौवन के आंगन
में थी खोती जाती ।"

संक्षेप में कहा जा सकता है कि महाकवि के काव्य में बाल सौन्दर्य से वयः संधि का चित्रण प्रभावी और पर्याप्त प्रेरक है ।

संदर्भिका

[1] डॉ. किरण कुमारी गुप्ता, हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2002 ।
[2] डॉ. किरण कुमारी गुप्ता, हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2001 ।
[3] गुलाब राय, काव्य और कला तथा अन्य निबंध ।
[4] डॉ. नरेश मिश्र, शतदल - आदेश – भूमिका ।
[5] डॉ. नरेश मिश्र, काव्य माधुरी, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1998 ।
[6] पुष्पा देवी, प्रो. हरिशंकर काव्य में प्रेम और सौंदर्य ।
[7] लालता प्रसाद सक्सेना, मंझन का सौंदर्य दर्शन, निर्मल प्रकाशन, जयपुर, 1974 ।
[8] टी. लाला भगवान दीन, राम चंद्रिका, रामनारायण लाल प्रभात पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद, 2002 ।
[9] गोस्वामी तुलसीदास, रामचरित मानस (बड़ा), गीता प्रेस, गोरखपुर, 2001 ।
[10] महादेवी वर्मा, आधुनिक कवि।
[11] डॉ. मिथिलेश पांडेय, भारतेन्दु ग्रन्थावली (खंड एक), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002 ।